224hi02

2

लेखांकन अवधारणाएं एवं परिपाटियां

पिछले पाठ में आपने वित्तीय लेखांकन का अर्थ तथा उसके उद्देश्यों को पढ़ा। कुछ अवधारणाएं एवं परिपाटियां हैं, जिनका अनुसरण लेखांकन में लम्बे समय से हो रहा है। यह अवधारणाएं लेखांकन का मूल आधार हैं। इन सभी अवधारणाओं का विकास, कई वर्षों के अनुभव से हुआ है। अत: यह सार्वभौमिक नियम हैं तथा इन्हें सामान्य रूप से स्वीकृत लेखांकन सिद्धांत (GAAP) कहते हैं। लेखांकन में कई परिपाटियों का उपयोग लेनदेनों के अभिलेखन के लिए करते आ रहे हैं। इस पाठ में आप लेखांकन अवधारणाओं एवं परिपाटियों का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- लेखांकन अवधारणा के अर्थ को समझ सकेंगे;
- इन लेखांकन अवधारणाओं के अर्थ एवं महत्व की व्याख्या कर सकेंगे : व्यवसाय इकाई, मुद्रा माप, चालू व्यापार एवं द्विपक्षीय।
- लेखांकन परिपाटी का अर्थ समझ सकेंगे तथा इन परिपाटियों के अर्थ एवं महत्व की व्याख्या कर सकेंगे : सारता, रूढ़िवादिता एवं समानरूपत/समनुरूपता।

2.1 लेखांकन अवधारणाएं

लेखांकन अवधारणाओं से अभिप्राय उन मूलभूत परिकल्पनाओं, नियमों एवं सिद्धान्तों से है जो व्यावसायिक लेनदेनों के अभिलेखन एवं खाते बनाने का आधार हैं। मुख्य लेखांकन अवधारणाएं हैं :

- व्यवसाय इकाई अवधारणा
- मुद्रा माप अवधारणा
- सतत् व्यवसाय अवधारणा
- द्विपक्षीय अवधारणा

2.2 व्यवसाय इकाई अवधारणा

इस अवधारणा के अनुसार, लेखांकन के लिए व्यावसायिक इकाई एवं इसका स्वामी दो पृथक इकाइयाँ है। अत: व्यवसाय एवं इसके स्वामी के व्यक्तिगत लेन देन अलग-अलग होते हैं। उदाहरण के लिए जब भी स्वामी, व्यवसाय में पूँजी लगाता है तो इसे व्यवसाय की, स्वामी के प्रति देयता लिखा जाता है। इसी प्रकार से जब स्वामी व्यवसाय में से रोकड़/माल को अपने निजी प्रयोग के लिए ले जाता है तो इसे व्यवसाय का व्यय नहीं माना जाता। अत: लेखांकन अभिलेखों को व्यावसायिक इकाई की दृष्टि से लेखांकन पुस्तकों में लिखा जाता है न कि व्यवसाय के स्वामी की दृष्टि से।

आइए एक उदाहरण लें, माना श्रीमती साक्षी ने ₹ 2,00,000 की राशि लगाकर एक व्यवसाय प्रारम्भ किया है। उसने ₹ 20,000 का माल खरीदा, ₹ 10,000 का फर्नीचर, ₹ 50,000 का संयंत्र एवं मशीनें खरीदीं तथा ₹ 20,000 उसके पास हस्तस्थ रोकड़ है। यह व्यवसाय की परिसंपत्तियां हैं न कि स्वामी की। व्यवसाय इकाई अवधारणा के अनुसार ₹ 2,00,000 की राशि, व्यवसाय की पूँजी अर्थात् व्यवसाय की स्वामी के प्रति देनदारी मानी जाएगी।

माना वह ₹ 5,000 नकद तथा ₹ 5,000 का माल अपने घर में प्रयोग के लिए ले जाता है। स्वामी द्वारा व्यवसाय से रोकड़/माल को ले जाना उसका निजी व्यय है, यह व्यवसाय का व्यय नहीं है। इसे आहरण कहते हैं। अत: व्यवसाय इकाई अवधारणा कहती है कि व्यवसाय तथा स्वामी दो पृथक इकाइयाँ है। इस प्रकार व्यावसाय इकाई अवधारणा यह कहती है कि व्यवसाय और उसके स्वामी, अपने लिए अथवा अपने परिवार के लिए व्यवसाय में से कोई खर्च करता है तो इसे व्यवसाय का खर्च नहीं बल्कि स्वामी का खर्च माना जाएगा तथा इसे आहरण के रूप में दिखाया जाएगा। इस अवधारणा के अनुसार क्योंकि व्यवसाय तथा उसके स्वामी पृथक इकाइयाँ माने जाते हैं, इसलिए इन दोनों के बीच होने वाले लेनदेनों का लेखा बहियों में किया जाता है।

महत्व

नीचे दिए गए बिन्दु व्यवसाय इकाई अवधारणा के महत्व पर प्रकाश डालते हैं :

- यह अवधारणा व्यवसाय के लाभ के निर्धारण में सहायक होती है, क्योंकि व्यवसाय में केवल व्यवसाय के खर्चों एवं आगमों का ही लेखा किया जाता है तथा सभी निजी एवं व्यक्तिगत खर्चों की अनदेखी की जाती है।
- यह अवधारणा लेखाकारों पर, स्वामी के निजी/व्यक्तिगत लेनदेनों के अभिलेखन पर रोक लगाती है।
- यह व्यवसाय की दृष्टि से व्यावसायिक लेन-देनों के लेखा करने एवं सूचना देने के कार्य को आसान बनाती है।
- यह लेखांकन अवधारणाओं, परिपाटियों एवं सिद्धान्तों के लिए मूल आधार का कार्य करती है।

पाठगत प्रश्न 2.1

रिक्त स्थानों की उचित शब्द भरकर पूर्ति कीजिए :

i. लेखांकन अवधारणाएँ लेखांकन के आधारभूत ___________ हैं।

ii. ___________ अवधारणा में यह माना जाता है कि व्यावसायिक उद्यम एवं इसके स्वामी दो अलग-अलग स्वतंत्र इकाइयाँ हैं।

iii. व्यवसाय में से स्वामी के निजी उपयोग के लिए माल को ले जाना ___________ कहलाता है।

2.3 मुद्रा माप अवधारणा

मुद्रा माप अवधारणा के अनुसार व्यावसायिक लेन-देन मुद्रा में होने चाहिएँ अर्थात् संबंधित देश की मुद्रा में। हमारे देश में यह लेन-देन रूपए में होते हैं। इस प्रकार से मुद्रा माप अवधारणा के अनुसार जिन लेन-देनों को मुद्रा के रूप में दर्शाया जा सकता है, उन्हीं का लेखा पुस्तकों में लेखांकन किया जाता है।

उदाहरण के लिए ₹ 1,00,000 का माल बेचा, ₹ 50,000 का कच्चा माल खरीदा, ₹ 20,000 किराए के भुगतान आदि मुद्रा में व्यक्त किए गए हैं, अतः इन्हें लेखा पुस्तकों में लिखा जाएगा। लेकिन जिन लेनदेनों को मुद्रा में नहीं दर्शाया जा सकता उनका लेखा लेखा-पुस्तकों में नहीं किया जाता। उदाहरण के लिए कर्मचारियों की गम्भीरता, वफादारी, ईमानदारी को लेखा पुस्तकों में नहीं लिखा जाता क्योंकि इन्हें मुद्रा में नहीं मापा जा सकता, जबकि इनका भी व्यवसाय के लाभ तथा हानि पर प्रभाव पड़ता है।

इस अवधारणा का एक पहलू यह भी है कि लेनदेनों का लेखा-जोखा भौतिक इकाइयों में नहीं बल्कि मुद्रा इकाइयों में रखा जाता है। उदाहरण के लिए, माना वर्ष 2011 के अंत में एक संगठन के पास 5 एकड़ जमीन पर एक कारखाना है, कार्यालय के लिए एक भवन है, जिसमें 10 कमरे हैं, 20 निजी कम्प्यूटर हैं, 30 कार्यालय कुर्सियाँ तथा मेजे हैं, 50 कि.ग्रा. कच्चा माल है। यह सभी विभिन्न इकाइयों में दर्शाये गए हैं। लेकिन लेखांकन में इनका लेखा-जोखा मुद्रा के रूप में अर्थात् रूपयों में रखा जाता है। इस उदाहरण में कारखाने की भूमि की लागत ₹ 6 करोड़, कार्यालय के भवन की ₹ 5 करोड़, कम्प्यूटरों के लिए ₹ 5 लाख, कार्यालय की कुर्सियों तथा मेजों की लागत ₹ 1 लाख तथा कच्चे माल की लागत ₹ 15 लाख है। इस प्रकार से संगठन की कुल परिसंपत्तियों का मूल्य ₹ 11 करोड़ ₹ 21 लाख है। इस प्रकार से लेखा पुस्तकों में केवल उन्हीं लेनदेनों का लेखांकन किया जाता है, जिन्हें मुद्रा में दर्शाया जा सके न कि मात्रा में।

महत्व

मुद्रा माप अवधारणा के महत्व को नीचे दिए गए बिन्दुओं के द्वारा दर्शाया गया है :

- यह अवधारणा लेखाकारों का मार्गदर्शन करती है कि किसका लेखा किया जाए और किसका नहीं।

- यह व्यावसायिक लेनदेनों के अभिलेखन में एकरूपता लाने में सहायक होता है।
- यदि सभी व्यावसायिक लेनदेनों को मुद्रा में दर्शाया जाता है तो व्यावसायिक इकाई द्वारा बनाए गए खातों को समझना आसान होगा।
- इससे किसी भी फर्म के, दो भिन्न अवधियों के और दो भिन्न फर्मों के एक ही अवधि के व्यावसायिक निष्पादन की तुलना करना सरल हो जाता है।

पाठगत प्रश्न 2.2

जिस सूचना को लेखा पुस्तकों में लिखा जाना चाहिए इसके आगे (√) का निशान लगाएँ और जिस सूचना को नहीं लिखा जाना है उसके आगे (X) का निशान लगाएँ।

i. प्रबन्ध निदेशक का स्वास्थ्य
ii. कारखाना भवन की ₹ 5 करोड़ की खरीद
iii. ₹ 20,000 किराए का भुगतान
iv. ₹ 40,000 की वस्तु दान के रूप में दी गई
v. कच्चे माल की आपूर्ति में देरी

चालू व्यापार अवधारणा

2.4 चालू व्यापार अवधारणा

इस अवधारणा का मानना है कि व्यावसायिक इकाई अपनी गतिविधियों को असीमित समय तक चलाती रहेगी। इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यवसाय इकाई के जीवन में निरंतरता है, इसलिए निकट भविष्य में इसका समापन नहीं होगा। इसी के आधार पर स्थिति विवरण में सम्पत्तियों के मूल्य को दिखाया जाता है। उदाहरण के लिए माना कि एक कम्पनी संयंत्र एवं मशीनरी ₹ 1,00,000 में खरीदती है जिसका जीवन काल 10 वर्ष का है। इस अवधारणा के अनुसार कुछ राशि को प्रतिवर्ष खर्च के रूप में दिखाया जाएगा, जबकि शेष को एक सम्पत्ति के रूप में। अत: हम कह सकते हैं कि यदि किसी मद पर कोई राशि खर्च की जाती है, जिसका व्यवसाय में कई वर्षों तक उपयोग होगा तो उस राशि को उस वर्ष के आगम में से समायोजित करना तर्कसंगत नहीं होगा जिस वर्ष में इसका क्रय किया गया है। इसके मूल्य के एक भाग को ही उस वर्ष के व्यय के रूप में दिखाया जाएगा, जिस वर्ष इसको क्रय किया गया है तथा शेष को सम्पत्ति के रूप में दिखाया जाएगा।

महत्व

निम्नलिखित बिन्दु चालू व्यापार अवधारणा के महत्व को दर्शाते हैं :

- इस अवधारणा की सहायता से वित्तीय विवरण तैयार किए जाते हैं।
- इस अवधारणा के आधार पर स्थायी सम्पत्तियों पर अवक्षयण लगाया जाता है।
- इससे निवेशकों को बड़ी सहायता मिलती है, क्योंकि यह उन्हें विश्वास दिलाता है कि उनको उनके निवेश पर आय प्राप्त होती रहेगी।
- इस अवधारणा के न होने पर स्थायी सम्पत्तियों की लागत को उनके क्रय के वर्ष में व्यय माना जाएगा।

- इस अवधारणा के अनुसार व्यवसाय का आकलन भविष्य में उसकी लाभ अर्जन क्षमता से किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 2.3

कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. चालू व्यापार अवधारणा यह बताता है कि प्रत्येक व्यापार अपने कार्यकलापों को _____ तक चलाता रहेगा। (निश्चित काल, अनिश्चित काल)

ii. स्थायी संपत्तियों को उनके _____ पर दर्शाया जाता है।
(लागत मूल्य, बाजार मूल्य)

iii. जिस अवधारणा के अनुसार, व्यावसायिक उपक्रम को निकट भविष्य में बंद नहीं किया जाएगा, उसे _____ कहते हैं।
(चालू व्यापार अवधारणा, मुद्रा माप अवधारणा)

iv. चालू व्यापार अवधारणा के आधार पर एक व्यवसाय अपना _____ तैयार करता है। (वित्तीय विवरण, बैंक विवरण, रोकड़ विवरण)

v. _____ अवधारणा का मानना है कि व्यवसाय एक पृथक इकाई है, जिसका अस्तित्व उसके स्वामी से अलग है।
(चालू व्यापार अवधारणा, व्यावसायिक इकाई अवधारणा)

2.5 द्विपक्षीय अवधारणा

द्विपक्षीय अवधारणा लेखांकन का आधारभूत अथवा मूलभूत सिद्धान्त है। यह व्यवसायिक लेनदेनों को लेखांकन पुस्तकों में अभिलेखित करने का मूल आधार प्रदान करता है। इस अवधारणा के अनुसार व्यवसाय के प्रत्येक लेन-देन का प्रभाव दो स्थानों पर पड़ता है अर्थात् यह दो खातो के विपरीत पक्षों को प्रभावित करता है। इसीलिए लेनदेनों का दो स्थानों पर अभिलेखन करना होगा। अर्थात् लेखा पुस्तकों में दोनों ही पक्षों का लेखा किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए माना नकद माल खरीदा। इसके दो पक्ष हैं :

(i) नकद भुगतान,
(ii) माल को प्राप्त करना।

इन दो पक्षों का अभिलेखन किया जाना है। अत: द्विपक्षीय अवधारणा को मूलभूत लेखांकन समीकरण के रूप में प्रर्दशित किया जा सकता है :

परिसंपत्तियाँ = देयताएँ + पूँजी

उपर्युक्त लेखा समीकरण के अनुसार व्यवसाय की परिसंपत्तियों का मूल्य सदैव स्वामी एवं बाह्य लेनदारों की दावे की राशि के बराबर होता है। स्वामी का दावा पूँजी अथवा स्वामित्व पूँजी के नाम से जाना जाता है तथा बाह्य लोगों की दावेदारी को देयताएँ अथवा लेनदारों की पूँजी कहते हैं। द्विपक्षीय अवधारणा का ज्ञान लेनदेन के दोनों पक्षों को पहचानने में सहायक

लेखांकन सिद्धान्त

होता है, जिससे बहियों में लेनदेनों का लेखा करने के नियम लागू करने में सहायता मिलती है। द्विपक्षीय अवधारणा का प्रभाव यह है कि प्रत्येक लेनदेन का प्रभाव संपत्तियों तथा देयताओं पर समान रूप से इस प्रकार पड़ता है कि कुल संपत्तियाँ तथा कुल देयताएँ सदैव बराबर रहती हैं।

आइए कुछ और व्यावसायिक लेन-देनों का उनके द्विपक्षीय रूप में विश्लेषण करें :

i) **व्यवसाय के स्वामी ने पूँजी लगाई :** पहला पक्ष रोकड़ की प्राप्ति, दूसरा पक्ष पूँजी में वृद्धि (स्वामीगत पूँजी)

ii) **मशीन खरीदी, भुगतान चैक से किया :** पहला पक्ष मशीन का स्वामित्व, दूसरा पक्ष बैंक शेष में कमी।

iii) **नकद माल बेचा :** पहला पक्ष रोकड़ प्राप्त हुई, दूसरा पक्ष ग्राहक को माल की सुपुर्दगी की गई।

iv) **मकान मालिक को किराए का भुगतान किया :** पहला पक्ष किराया (व्यय किया गया) दूसरा पक्ष रोकड़ भुगतान।

लेनदेन के दोनों पक्षों के पता लग जाने के पश्चात् लेखांकन के नियमों को लागू करना तथा लेखा पुस्तकों में उचित अभिलेखन करना सरल हो जाता है। द्विपक्षीय अवधारणा का अर्थ है कि प्रत्येक लेनदेन का सम्पत्तियों एवं देयताओं पर इस प्रकार से समान प्रभाव पड़ता है कि व्यवसाय की कुल परिसम्पतियाँ सदा उसकी देयताओं के बराबर होगी।

महत्व

निम्नलिखित बिन्दु द्विपक्षीय अवधारणा के महत्व को स्पष्ट करते हैं :

- यह अवधारणा लेखाकारों को लेखांकन संबंधी अशुद्धियाँ पहचानने में सहायक होती है।
- यह लेखाकारों को प्रत्येक प्रविष्टि की खतौनी, प्रभावित दोनों खातों में, एक-दूसरे के विरूद्ध पक्षों में करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- यह एक निश्चित तिथि को वित्तीय स्थिति विवरण/तुलनपत्र बनाने में सहायक होती है।

पाठगत प्रश्न 2.4

निम्न लेनदेनों से प्रभावित होने वाले दोनों पक्षों को लिखिए :

क्र.सं.	लेनदेन	प्रथम पक्ष	द्वितीय पक्ष
i.	स्वामी व्यवसाय में रोकड़ लाता है		
ii.	नकद माल खरीदा		
iii.	नकद माल बेचा		
iv.	फर्नीचर नकद खरीदा		
v.	शर्मा से रोकड़ प्राप्त हुआ		
vi.	राम से मशीन उधार खरीदी		
vii.	राम को भुगतान किया		

viii.	वेतन का भुगतान किया		
ix.	किराए का भुगतान किया		
x.	कमीशन प्राप्त हुआ		

2.6 लेखांकन परिपाटियों का अर्थ

लेखांकन परिपाटी से अभिप्राय उन सामान्य पद्धतियों से है जिनका व्यावसायिक इकाइयों द्वारा लेखांकन सूचना के अभिलेखन एवं प्रस्तुतीकरण में विश्व भर में पालन किया जाता है। समाज के रीति-रिवाज के समान इनका अनुसरण किया जाता है। लेखांकन परिपाटियों का विकास लेखा पुस्तकों में अभिलेखन में समरूपता लाने के लिए वर्षों से नियमित एवं समनुरूप व्यवहार के द्वारा हुआ है। लेखांकन परिपाटियाँ विभिन्न व्यावसायिक इकाइयों के बीच अथवा एक ही इकाई के विभिन्न अवधियों के लेखांकन आंकड़ों की तुलना करने में सहायक होती हैं। इनका विकास अनेक वर्षों में हुआ है। लम्बी अवधि से जिन परिपाटियों का प्रयोग किया जा रहा है, उनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिपाटियां हैं :

- समनुरूपता (Consistency) की परिपाटी
- सारता (Materiality) की परिपाटी
- रूढ़िवादिता (Conservatism) की परिपाटी

2.7 समनुरूपता (Consistency) की परिपाटी

समनुरूपता की परिपाटी के अनुसार प्रत्येक वर्ष वित्तीय विवरणों को तैयार करने के लिए समान लेखांकन सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जब किसी एक इकाई के वित्तीय विवरणों की तुलना की जाती है तो कुछ वर्षों के सारगर्भित परिणाम निकलते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जबकि व्यावसाय, जिन लेखांकन नीतियों एवं व्यवहारों को अपना रहा है, वह काफी समय तक एक समान एवं समरूप हों। वित्तीय विवरणों को तैयार करने के लिए यदि अलग-अलग वर्षों के लिए अलग-अलग लेखा पद्धतियों एवं व्यवहारों का पालन किया जा रहा है तो परिणामों की तुलना संभव नहीं होगी। लेखा पुस्तकें बनाते समय व्यवसायियों द्वारा सामान्यत: प्रतिवर्ष एक समान पद्धतियों तथा विधियों का प्रयोग किया जाता है।

स्थायी सम्पत्तियों पर अवक्षयण लगाते समय अथवा बिना बिके स्टॉक का मूल्यांकन करते समय यदि कोई एक पद्धति अपनाई गई है तो इसे आगे आने वाले वर्षों में भी मानना होगा तभी वित्तीय विवरणों का विश्लेषण संभव है तथा उनकी तुलना की जा सकती है। इसको और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। स्थायी संपत्तियों पर अवक्षयण लगाते समय लेखाकार अवक्षयण की कोई एक विधि को अपना सकता है, जैसे कि ह्रासित मूल्य पद्धति अथवा सरल रेखा पद्धति। इसी प्रकार से अन्तिम स्टॉक का मूल्यांकन वास्तविक लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य जो भी कम है पर किया जा सकता है। वैसे कीमती धातुओं जैसे कि सोना, हीरे, खनिज पदार्थ का मूल्यांकन केवल बाजार मूल्य पर किया जाता है।

अत: इस परिपाटी के अनुसार प्रतिवर्ष वित्तीय विवरणों को तैयार करने के लिए समान पद्धतियों को अपनाना चाहिए। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि एक बार यदि एक

लेखांकन पद्धति का प्रयोग कर लिया तो उसे कभी बदला नहीं जा सकता। जब भी पद्धति में परिवर्तन आवश्यक समझा जाए तो उस वर्ष वित्तीय विवरणों में टिप्पणी देकर यह तथ्य उजागर कर देना चाहिए।

महत्व

- इससे वित्तीय विवरणों का तुलनात्मक विश्लेषण सुविधाजनक हो जाता है।
- यह स्थायी सम्पत्तियों पर अवक्षयण लगाने एवं स्टॉक के मूल्यांकन में एक रूपता को सुनिश्चित करता है।

पाठगत प्रश्न 2.5

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. समनुरूपता परिपाटी का अर्थ है कि _____ वित्तीय विवरणों को तैयार करने के लिए समान सिद्धांतों का उपयोग करना चाहिए।

ii. बिना बिके माल का मूल्यांकन लागत अथवा _____ में से जो भी _____ पर किया जाता है।

iii. कीमती धातु जैसे कि सोना, चाँदी आदि का मूल्यांकन साधारणतः _____ पर किया जाता है।

iv. _____ की परिपाटी के अनुसार वर्ष प्रति वर्ष समान पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है।

2.8 सारता (Matertality) की परिपाटी

सारता की परिपाटी के अनुसार वित्तीय विवरणों को अर्थपूर्ण बनाने के लिए लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ताओं को केवल सारपूर्ण तथ्य अर्थात् महत्वपूर्ण एवं आवश्यक सूचना ही प्रदान की जानी चाहिए। यहां प्रश्न यह उठता है कि किन तथ्यों को सारपूर्ण तथ्य या महत्वपूर्ण तथ्य कहेंगे यह निर्भर करेगा कि उस तथ्य की प्रकृति क्या है तथा उसमें निहित धन राशि कितनी है। कोई भी ऐसा तर्कसंगत तथ्य जो सूचना के उपयोगकर्त्ता के निर्णय को प्रभावित करने में सक्षम है वह सार पूर्ण तथ्य माना जाएगा। उदाहरण के लिए माना एक व्यवसायी इलैक्ट्रोनिक वस्तुओं का व्यापार कर रहा है। वह अपने व्यवाय के लिए टी.वी. रेफ्रीजरेटर, कपड़े धोने की मशीन, कम्प्यूटर आदि क्रय करता है। इन वस्तुओं के क्रय में वह अपनी अधिकांश पूँजी का उपयोग कर लेता है। अब क्योंकि यह वस्तुएँ महत्वपूर्ण वस्तुएं हैं इसलिए लेखा पुस्तकों में इनका अभिलेखन विस्तार से किया जाना चाहिए। अब वह दिन-प्रतिदिन के कार्यालयी कार्य के लिए पैन, पेन्सिल, माचिस, अगरबत्ती आदि खरीदता है। इस पर वह पूँजी का बहुत थोड़ा भाग खर्च करेगा। वैसे भी प्रत्येक पेन, पेन्सिल, माचिस तथा अन्य छोटी-छोटी वस्तुओं का पूरा ब्योरा रखना महत्वपूर्ण नहीं माना जाता। यह वस्तुएँ कम महत्व रखती हैं इसलिए इनका अभिलेखन अलग से किया जाता है। अतः जिन मदों का विस्तृत रूप से अभिलेखन महत्वपूर्ण है, सारपूर्ण तथा महत्वपूर्ण मदें कहलाएँगी। जो मदें कम महत्व रखती हैं वह

सारहीन तथ्य अथवा महत्वहीन मदें कहलाएँगी। अत: इस परिपाटी के अनुसार महत्वपूर्ण मदों को उनके अपने शीर्षकों के अन्तर्गत लिखा जाता है, जबकि सारहीन एवं महत्वहीन लेनदेनों को इकट्ठा कर एक अलग लेखांकन शीर्षक के अन्तर्गत लिखना चाहिए।

महत्व

- यह गणना में गलतियों को न्यूनतम रखने में सहायक होती है।
- यह वित्तीय विवरणों को अर्थपूर्ण बनाने में सहायता करती है।
- इससे समय एवं संसाधनों की बचत होती है।

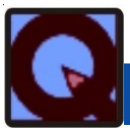

पाठगत प्रश्न 2.6

उचित शब्द भर कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. _____ परिपाटी के अनुसार वित्तीय विवरणों को अधिक अर्थपूर्ण बनाने के लिए उपयोगकर्ताओं को केवल सार्थक एवं महत्वपूर्ण मदों की आपूर्ति की जाती है।

ii. सारता परिपाटी के अनुसार गैर-महत्वपूर्ण मदों को _____, _____ के अंतर्गत प्रकट करना चाहिए।

iii. _____ परिपाटी के कारण लेखाकार एवं प्रबन्धक महत्वपूर्ण मदों पर ध्यान देते हैं।

iv. _____ का अर्थ है वह सूचना जो कि उपयोगकर्ता के निर्णय को प्रभावित करेगी।

2.9 रूढ़िवादिता (CONSERVATISM) की परिपाटी

यह परिपाटी इस सिद्धान्त पर आधारित है कि "लाभ की आशा न कर सभी हानियों के लिए प्रावधान करें।" यह लेखा पुस्तकों में अभिलेखन के लिए दिशा प्रदान करती है। लाभ दर्शाने में यह सावधानी से चलने की नीति पर आधारित है। इस परिपाटी का मुख्य उद्देश्य न्यूनतम लाभ दर्शाना है। लाभ अनावश्यक रूप से बढ़े हुए न दिखें। यदि वास्तविक लाभ से अधिक लाभ उल्लिखित होगा तो पूँजी में से लाभांशों का वितरण करना पड़ेगा। यह उचित नीति नहीं मानी जाएगी तथा इससे उपक्रम की पूँजी में भी कमी आएगी।

इस परिपाटी के अनुसार यह स्पष्ट है कि समस्त लाभों का अभिलेखन लेखा-पुस्तकों में तब तक नहीं करना चाहिए जब तक कि वह अर्जित न हों लेकिन वह सभी हानियां जिनकी यदि दूरस्थ संभावना भी हो तो उनके लिए लेखा पुस्तकों में पर्याप्त प्रावधान कर लेना चाहिए। अन्तिम स्टॉक का मूल्यांकन वास्तविक मूल्य व बाजार मूल्य में जो कम है उस पर करना तथा संदिग्ध ऋणों के लिए आरम्भ से ही प्रावधान करना, देनदार को छूट के लिए प्रावधान करना, अमूर्त सम्पत्तियों जैसे ख्याति, पेटेंट आदि का सामयिक अपलेखन आदि इसके उदाहरण हैं। रूढ़िवादिता की परिपाटी अनिश्चितता एवं शंका की स्थिति में बहुत उपयोगी रहती है।

महत्व

- यह वास्तविक लाभ के निर्धारण में सहायक होती है।
- यह अनिश्चितता एवं शंका की स्थिति में उपयोगी रहती है।
- यह व्यवसाय की पूँजी की स्थिरता में सहायक होती है।

पाठगत प्रश्न 2.7

I. निम्नलिखित परिस्थितियों में अपना निर्णय दीजिए :

i. एक व्यवसाय के पास वर्ष के अंत में बिना बिका स्टाक है। लागत मूल्य ₹ 20,000 तथा बाजार मूल्य ₹ 25,000 है। किस मूल्य पर बिना बिके स्टाक का अभिलेखन किया जाए?

ii. यदि उपरोक्त (i) स्थिति में लागत कीमत ₹ 26,000 है तो आपका निर्णय क्या होगा?

iii. एक व्यवसाय का अनुमान है कि उसके देनदारों में से शायद वह ₹ 5,000 प्राप्त करने में असमर्थ होगा। क्या वह इस बात का लेखा पुस्तकों में लेखा करेगा तथा किस खाते में करेगा?

II. बहुविकल्पीय प्रश्न

i. सतत् व्यापार अवधारणा के अनुसार व्यवसाय को जिस दृष्टिकोण से देखा जाता है वह है :

क) सीमित जीवन ख) अतिदीर्घ जीवन
ग) अनन्त जीवन घ) दीर्घ जीवन

ii. स्टॉक का मूल्यांकन लागत अथवा शुद्ध वसूली मूल्य, जो भी कम हो पर किया जाता है, यह उदाहरण है :

क) समरूपता परिपाटी ख) रूढ़िवादिता परिपाटी
ग) सारता परिपाटी घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

iii. निम्न में से किस अवधारणा के अनुसार लेनदेन के दो पक्षों का लेखा किया जाता है :

क) मिलान अवधारणा ख) मुद्रा माप अवधारणा
ग) द्विपक्षीय अवधारणा घ) वसूली अवधारणा

iv. निम्न में से किस अवधारणा के अनुसार व्यवसाय का स्वामी भी उसकी पूँजी की सीमा तक लेनदार माना जाता है :

क) मुद्रा माप अवधारणा ख) द्विपक्षीय अवधारणा
ग) व्यवसाय इकाई अवधारणा घ) वसूली अवधारणा

v. रूढ़िवादिता की परिपाटी में ध्यान में रखा जाता है :

क) सभी संभावित हानियां लेकिन संभावित लाभों को छोड़ दिया जाता है
ख) सभी संभावित लाभों लेकिन संभावित हानियों को छोड़ दिया जाता है

टिप्पणी

ग) सभी संभावित लाभ एवं संभावित हानियां

घ) सभी संभावित लाभ एवं संभावित हानियों को छोड़ दिया जाता है

आपने क्या सीखा

- लेखांकन अवधारणा से अभिप्राय मूलभूत परिकल्पना से है जो वास्तविक व्यावसायिक लेनदेनों के लेखा करने का आधार होते हैं।
- महत्वपूर्ण लेखांकन अवधारणाएं हैं : व्यावसायिक इकाई, मुद्रा मापन, चालू व्यापार, द्विपक्षीय।
- व्यावसायिक इकाई अवधारणा में यह माना जाता है कि लेखांकन के उद्देश्य के लिए व्यावसायिक इकाई एवं इसका स्वामी दो अलग-अलग इकाइयाँ हैं।
- मुद्रा माप अवधारणा यह मानती है कि सभी व्यावसायिक लेनदेनों का अभिलेखन लेखा पुस्तकों में मुद्रा रूप में करना चाहिए।
- चालू व्यापार अवधारणा के अनुसार व्यावसायिक इकाई अपनी क्रियाओं को अनिश्चित समय तक करती रहेगी।
- द्विपक्षीय अवधारणा के अनुसार प्रत्येक लेनदेन का दो पहलुओं पर प्रभाव पड़ता है।
- लेखांकन परिपाटियां वह सामान्य व्यवहार हैं, जिनका अनुसरण व्यवसाय की लेखांकन सूचना के अभिलेखन एवं प्रस्तुतीकरण में किया जाता है।
- समरूपता की परिपाटी के अनुसार वित्तीय विवरणों के निर्माण में प्रतिवर्ष एक जैसी लेखांकन विधियों को अपनाया जाना चाहिए।
- सारता की परिपाटी के अनुसार वित्तीय विवरणों में सभी संबंधित महत्वपूर्ण एवं सारपूर्ण तथ्यों को पूर्णतया प्रकट करना चाहिए।
- रूढ़िवादिता की परिपाटी के अनुसार लाभ का तब तक अभिलेखन नहीं किया जाना चाहिए, जब तक कि वह वसूल न हो जाए। लेकिन यदि व्यवसाय में निकट भविष्य में कोई हानि होने की संभावना है तो लेखा पुस्तकों में उसके लिए प्रावधान किया जाना चाहिए।

पाठांत प्रश्न

1. चालू व्यापार अवधारणा का अर्थ एवं महत्व को समझाइए।
2. व्यावसायिक इकाई अवधारणा से आप क्या समझते हैं?
3. मुद्रा माप अवधारणा के अर्थ एवं महत्व को बताइए।
4. लेखांकन अवधारणा से आप क्या समझते हैं? किन्हीं चार अवधारणाओं को समझाइए।
5. उदाहरण के साथ समनुरूपता की परिपाटी को समझाइए।
6. उदाहरण के साथ लेखांकन की रूढ़िवादिता की परिपाटी को समझाइए।
7. सारता की परिपाटी को समझाइए।

8. द्विपक्षीय अवधारणा के अर्थ एवं महत्व को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 (i) नियम (ii) व्यवसाय इकाई (iii) आहरण

2.2 (i) अभिलेखन नहीं किया जाएगा (✗) (ii) अभिलेखन किया जाएगा (✓)
(iii) अभिलेखन किया जाएगा (✓) (iv) अभिलेखन किया जाएगा (✓)
(v) अभिलेखन नहीं किया जाएगा (✗)

2.3 (i) अनिश्चित काल (ii) लागत मूल्य (iii) चालू व्यापार अवधारणा
(iv) वित्तीय विवरण (v) चालू व्यापार

2.4 (i) नकद, स्वामीगत पूँजी (ii) माल प्राप्त किया, नकद
(iii) नकद, माल बेचा (iv) फर्नीचर, नकद
(v) नकद, शर्मा (vi) मशीन, राम (vii) राम, नकद
(viii) वेतन, नकद (ix) किराया, नकद (x) नकद, कमीशन

2.5 (i) वर्ष प्रति वर्ष (ii) बाजार मूल्य, कम हो (iii) बाजार मूल्य
(iv) समनुरूपता

2.6 (i) सारता (ii) अलग लेखांकन शीर्षक (iii) सारता (iv) सारता

2.7 **I.** (i) ₹ 20,000 (ii) ₹ 25,000 (iii) हाँ; डूबते ऋण प्रावधान

II. (i) ग (ii) ख (iii) ग (iv) ग (v) क

आपके लिए क्रियाकलाप

- विभिन्न व्यवसायिक इकाइयों से पूछे कि किन-किन अवधियों में वे एक ही लेखांकन व्यवहार का अनुसरण नहीं करते हैं?